

**क्षाराष्टक** पुं. (तत्.) आयु. आठ प्रकार के क्षारों का समूह धव, अपामार्ग, कौरैया, तिल और मोरवा आदि। छह प्रकार के क्षारों का समूह (पलाश (ढाक) आक, जवाखार, सज्जी आदि का समूह)।

**क्षारिकर** स्त्री. (तत्.) भूख, बुभुक्षा।

**क्षारित** वि. (तत्.) 1. जिसका क्षरण हुआ हो 2. टपकाया हुआ 3. दूषित 4. जिस पर व्यभिचार का मिथ्या अपवाद लगाया गया हो।

**क्षारोद** पुं. (तत्.) खारा समुद्र, लवण समुद्र।

**क्षारोदक** पुं. (तत्.) दे. क्षारोद।

**क्षारोदधि** पुं. (तत्.) दे. क्षारोद।

**क्षालन** पुं. (तत्.) धोना, साफ करना, निर्मल करना।

**क्षारीय** वि. (तत्.) क्षार से संबंध रखने वाला।

**क्षालित** वि. (तत्.) धोया हुआ, साफ किया हुआ।

**क्षित** वि. (तत्.) 1. क्षीण, छीजा हुआ 2. नष्ट, ध्वस्त 3. दीन 4. दुर्बल किया हुआ।

**क्षित** पुं. (तत्.) 1. बध 2. आघात, प्रहार।

**क्षिति** पुं. (तत्.) 1. पृथ्वी 2. रहने का स्थान, जगह 3. क्षय 4. प्रलयकाल 5. एक की संख्या 6. पंचम स्वर की एक श्रुति जैसे- छलकती मुख की छवि-पुंजता। छिटकती क्षितिज तन की छटा। बगरती बर दीप्ति दिगंत में। क्षितिज में क्षणदा कर कांति सी।

**क्षितिक्षम** पुं. (तत्.) खैर का पेड़।

**क्षिति** पुं. (तत्.) पृथ्वी।

**क्षितिज** पुं. (तत्.) 1. वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिले हुए जान पड़ते हैं 2. दृष्टि सीमा 3. मंगल ग्रह 4. नरकासुर 5. केंचुवा 6. वृक्ष, पेड़ उदा. तारागण नभ प्रांत क्षितिज छोर में चंद्र था। फैला कोमल ध्वांत, दीपक जलाकर बुझ गए-झरना)।

**क्षितिजा** स्त्री. (तत्.) पृथ्वी की कन्या, सीता।

**क्षितितनय** पुं. (तत्.) मंगल ग्रह।

**क्षितितनया** स्त्री. (तत्.) सीता।

**क्षितितल** पुं. (तत्.) पृथ्वी तल, धरातल।

**क्षितिदेव** पुं. (तत्.) 1. ब्राह्मण 2. भूसुर।

**क्षितिधर** पुं. (तत्.) पर्वत, भूधर।

**क्षितिपति** पुं. (तत्.) राजा, भूपति।

**क्षित्यदिति** स्त्री. (तत्.) कृष्ण की माता देवकी।

**क्षित्यधिप** पुं. (तत्.) राजा, पृथ्वी का स्वामी।

**क्षिद्र** पुं. (तत्.) 1. सूर्य 2. रोग 3. सींग।

**क्षिप** वि. (तत्.) 1. फेंकनेवाला 2. अपमान करने वाला 3. मारने वाला।

**क्षिप** पुं. (तत्.) फेंकने की क्रिया, झिड़कने का कार्य।

**क्षिपक** पुं. (तत्.) 1. तीरंदाज, योद्धा।

**क्षिपण** पुं. (तत्.) 1. फेंकना 2. भेजना 3. डालना 4. बिखराना 5. अभियोग लगाना 6. भर्त्सना करना।

**क्षिपणि** स्त्री. (तत्.) डॉंड, चप्पू 2. जाल 3. हथियार 4. क्षेप्यास्त्र।

**क्षिपणी** स्त्री. (तत्.) चाबुक का प्रहार, कशाघात।

**क्षिपण्यु** पुं. (तत्.) 1. शरीर 2. बसंत ऋतु 3. सुवास, सुगंध।

**क्षिपा** स्त्री. (तत्.) 1. फेंकना 2. डालना 3. रात।

**क्षिप्त** वि. (तत्.) 1. फेंका हुआ 2. त्यागा हुआ 3. विकीर्ण 4. अवज्ञात 5. अपमानित 6. पतित 7. वात रोग से ग्रस्त 8. पागल, विक्षिप्त पुं. (तत्.) चित्त की पाँच वृत्तियों में से एक, जिसमें चित्त रजोगुण के द्वारा सदा अस्थिर रहता है।

**क्षिप्ता** स्त्री. (तत्.) रात्रि, रात।

**क्षिप्र** क्रि वि. (तत्.) शीघ्र, जल्दी, तत्क्षण, तुरंत वि. (तत्.) 1. तेज, जल्द 2. चंचल पुं. (तत्.) 1. शरीर में अँगूठे और उँगली के बीच का स्थान 2. एक मुहूर्त का पंद्रहवाँ भाग।